ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 78 बुलेटिन अवधिः 7–11 अक्टूबर, 2017 दिनः शुक्रवार **दिनाँकः 06 अक्टूबर, 2017**

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल**				
	07–10–2017	**08–10–2017**	**09–10–2017**	**10–10–2017**	**11–10–2017**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	24	23	23	22
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	15	15	15	14	14
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	50	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	006	006	006	008
वायु की दिशा	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**29 सितम्बर** से **05 अक्टूबर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में हल्के और मध्यम बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 22.0 से 23.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 12.4 से 14.1 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ धान की फसल में जीवाणु झुलसा रोग की रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम + कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ गन्ने के तीन झुण्डों को को आपस में मिलाकर बधाई करें।
- ❖ धान फसलो मे खरपतवार नियंत्रण तथा पानी रोकने की उचित व्यवस्था करे।

- धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है0 या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है0 या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है0 की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।
- भूरा फुदका या सफेद पीठ वाला फुदका (तेला) का प्रकोप हो तो बुप्रोफेजिन 25 एससी 1 लीटर/है0 या फिप्रोनिल 5 एससी 1 लीटर /है0 या क्लोथियानिडिन 50 डब्लूडीजी 30 गम्रम/है0 या थयामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 100ग्राम /है0 की दर से 500 लीटर पानी में घोलकर पौधों के तने पर छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में सब्जी मटर की फसल या तो फूल आने की अवस्था में होगी या लगभग फूल आ चुकें होंगे, में गुड़ाई के पश्चात् दो पंक्तियों के बीच में पड़ी खाली जगह में नमी संरक्षण हेतु एक से दो से0मी0 मोटी पलवार पदार्थ की परत बना लें। इससे न केवल सब्जियाँ अच्छी गुणवत्ता वाली होंगी अपितु उत्पादन में भी 20–40 प्रतिशत की वृद्धि होगी। इसी तरह की तकनीक को मूली, गाजर एवं शलजम सब्जियों में भी अपनाएँ।
- तैयार खेतों में तथा पॉलीहाउस के भीतर लगी सब्जी राई की पौंध प्रतिरोपण हेतु तैयार है तो अपराहन के समय 50 ग 40 से0मी0 की दूरी पर प्रतिरोपण करें।
- घाटी क्षेत्रों में यदि खेत तैयार हो तो आलू की कूफरी अशोक या कूफरी ज्योति किस्म की बुवाई करें। ध्यान रहे की खेत अधिक गीले न हों।
- टमाटर की फसल में पत्तियां सिकुड़ने की अवस्था में प्रभावित पौधों को निकालकर नष्ट कर दें एवं किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में बैंगन एवं शिमलामिर्च के फलों की तुड़ाई करें तथा रोग युक्त फलो/पत्तियों या पौंध अवशेषों को खेत से बाहर करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उस से सही उत्पादन प्राप्त हो सके।
- पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ज्ञामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।

डा0 आर0 के0 सिंह

प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,

गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर